

## रात का गीत (1 अगस्त)

**यूहन्ना 12:26 यदि कोई मेरी सेवा करे, तो मेरे पीछे हो ले।**

यह सच्चे राज्य की स्थापना का समय है - जो केवल एक हाथ की दुरी पर है। यह दुनिया के हर कोने से, हर देश से, परमेश्वर के चुने हुएों को इकठ्ठा करने का समय है, जो कि अभी बेबीलोन यानि इस दुनिया में शैतान की युक्तियों के बंदी हैं। मसीह में जो स्वतंत्रता है उसकी फिर से पुष्टि करने का समय है। इस समय में प्रभु के लोगों को केवल प्रभु यीशु मसीह को ही अपने राजा और निर्देशक के रूप में पहचानना चाहिए। यह समय प्रभु के लोगों के लिये यशायाह 2:22 वचन को सुनने का है, "इसलिये तुम मनुष्य से परे रहो जिसकी श्वास उसके नथनों में है, क्योंकि उसका मूल्य है ही क्या?" इस समय में हमें केवल प्रभु यीशु मसीह की ओर देखना है, कि वे अपने आत्मिक इस्राएलियों की सेवा के लिये, सच्चाई के किन माध्यमों या साधनों का उपयोग करते हैं या कर रहे हैं। जब हमें वर्तमान स्थिति का पता चलता है, तो हम पाते हैं कि पाँप, कार्डिनल, बिशप, दिव्यता के डॉक्टरों आदि को सम्मान और पहचान देने यह सारा मामला दिव्य व्यवस्था के विपरीत है - प्रत्यक्ष रूप से यह सब दिव्य व्यवस्था का विरोध करता है; लेकिन फिर भी, प्रभु के काम की पूर्ति और सच्चे इस्राएलियों, चुने हुएों, प्रभु के गहनों, को नाम के इस्राएल से बाहर निकालने में, यह सब एक बाधा नहीं है और न ही इसे बाधा डालने की अनुमति दी जाएगी। दुनिया के लोग चाहे जो भी करें, इसके बावजूद भी प्रभु यीशु के कार्य धीरे धीरे नियमित रूप से चालू हैं `Z'03-203` R3217:3 (Hymn 312) आमीन

## रात का गीत (2 अगस्त)

भजन संहिता 42:11 हे मेरे प्राण तू क्यों गिरा जाता है? तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है? परमेश्वर पर भरोसा रख; क्योंकि वह मेरे मुख की चमक और मेरा परमेश्वर है, मैं फिर उसका धन्यवाद करूंगा।

क्या मसीह के निमित्त क्लेशों में विश्वासी रहनेवालों में से किसी के पास शान्ति की कमी है ? ऐसा इसलिये है क्योंकि आप में वादों को पकड़ कर रखने के लिए विश्वास की कमी है - बहुत ही बड़ी और बहुमूल्य प्रतिज्ञाएँ उनसे की गई हैं जो अपना क्रूस उठाकर मसीह के पदचिन्हों पर चल रहे हैं - उनके साथ दुःख उठा रहे हैं .... लेकिन अगर आपके पास दुख के बिना शांति है, और यदि सभी मनुष्य आपके बारे में अच्छी बातें करते हैं, तो सावधान रहें! यह एक नींद की शांति है, जिसमें एक सपना है कि, वह भरा हुआ है और उसे मुकुट पहनाया गया है, और जब वह जागता है, तो खुद को खाली पाता है - महासागर पर शांत मृतकों की सी शांति।  
'Z'82-May, p.2` R347:6 (Hymn 106) आमीन

## रात का गीत (3 अगस्त)

यिर्मयाह 31:3 यहोवा ने मुझे दूर से दर्शन देकर कहा है। मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हूँ; इस कारण मैं ने तुझ पर अपनी करुणा बनाए रखी है।

पूरी दुनिया खुशियों की तलाश में है। जिन थोड़े से लोगों ने यीशु को सचमुच में पाया है, और जिन्होंने अपने हृदय का पूरा समर्पण प्रभु के लिये कर दिया है, और जिनको प्रभु ने जीवन का जल दिया है - इन कुछ लोगों ने वह खुशी पाई है, जिसे दुनिया व्यर्थ में अन्य दिशाओं में खोज रही है। उन्होंने मन की संतुष्टि को पाया है, जो यहाँ तक की दूसरे स्रोतों से आई परीक्षाओं, दुख, कठिनाइयों और निराशाओं को संतुलित करने में सक्षम है, और इस अहसास से परमेश्वर को महिमा देते हैं, क्योंकि उनको मालूम है कि, ये सारे अनुभव मिलकर इनके लाभ के लिये कार्य कर रहे हैं, उनको साबित कर रहे हैं, और बाद में और भी ज्यादा बड़ी महिमा के धन लिये तैयार कर रहे हैं। `Z'05-31` R3496:4 (Hymn 129) आमीन

#### रात का गीत (4 अगस्त)

इफिसियों 1:22 और सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया; और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया।

हे प्रियों, समय कम है, जिस बड़े इनाम की हम खोज में हैं, वह निकट है: "निशाना", या चरित्र का जो स्तर हमें प्राप्त करना है, उसे हमारे सामने स्पष्ट रूप से रखा गया है, और पवित्रशास्त्र प्रभु के प्रति पूरा समर्पण करने की आवश्यकता के उदाहरणों से प्रकाशमान है, और इस प्रकाश की रौशनी हमें यह दिखाती है की पुरे समर्पण का मतलब है - खुद के लिये मर जाना। क्या हममें

से प्रत्येक को यह नहीं देखना चाहिए की परमेश्वर के अनुग्रह से हर दूसरे सिर और अधिकार को पूरी तरह से काट कर अलग कर दिया जाए, और इसके बाद, जैसा कि प्रेरित ने कहा है, "क्योंकि मेरे लिये जीवित रहना मसीह है" - हमें भी मसीह की देह के सदस्य के रूप में, उन्हीं की इच्छा के अनुसार चलना चाहिए? प्रभु की इच्छा को हम वचनों, और उनके प्रावधानों और उदाहरणों के माध्यम से जान सकते हैं। परमेश्वर की इच्छा के अनुसार पूरी तरह से चलना हमारे प्रभु यीशु के चरित्र की समानता को पूरी तरह से पाने का एक दूसरा चित्र है। क्या हमारे प्रभु यीशु ने अपने खुद के अधिकार को, अपनी खुद की इच्छा को, पिता की इच्छा के लिये नहीं दे दिया था ? निश्चय, उन्होंने ऐसा ही किया था; और जैसे कि प्रभु यीशु के पूर्ण समर्पण को पिता के द्वारा पुरस्कृत किया गया था, उसी प्रकार हमारे पास भी यह आश्वासन है कि हमारे पूर्ण समर्पण (और इससे कम कुछ भी नहीं) को भी हमारे प्रभु और शिरोमणि के द्वारा उनके राज्य में पूरी तरह से पुरस्कृत किया जायेगा। 'Z'01-229' R2846:1 (Hymn 326) आमीन

## रात का गीत (5 अगस्त)

1 तीमुथियुस 1:12 में अपने प्रभु मसीह यीशु का जिसने मुझे सामर्थ दी है, धन्यवाद करता हूं कि उसने मुझे विश्वासयोग्य समझकर अपनी सेवा के लिये ठहराया।

अहा, जी हाँ, हमारे लिये यह जानना कितना आशीषित और संतोषजनक है कि, यद्यपि प्रभु हमारे प्रत्येक शब्द और प्रत्येक काम को जानते हैं, फिर भी वे हमें कुछ अलग लोगों (विश्वासयोग्य) में गिनकर प्रसन्न होते हैं, यहाँ तक की हमारे शब्दों और हमारी क्रियाओं से हमें अलग मानते हैं - कुछ बेहतर मानते हैं! हमारे शब्द हमेशा हमारे हृदय की पूर्ण भावनाओं को नहीं दर्शाते हैं; हमारा आचरण हमेशा दिव्य स्तर के अनुसार खरा नहीं उतरता: शब्दों को बोलने के बाद और क्रियाओं को करने के बाद -- संभवतः हमारी क्षमता के मुताबिक सबसे अच्छा करने के बाद भी -- हम यह महसूस करते हैं कि हमारे शब्द और क्रियाएँ परमेश्वर की महिमा में कम पड़ गए हैं, और हमारे खुद के आदर्शों, इच्छाओं और प्रयासों की तुलना में भी कम हैं। यह कितना सान्त्वना देने वाला अहसास है कि, हमारे अपरिपूर्ण कार्य परमेश्वर को प्रभु यीशु मसीह के द्वारा स्वीकार योग्य होंगे; और यह कि परमेश्वर हमारी गिनती हमारे इरादों और हमारी इच्छाओं के मुताबिक करते हैं। परमेश्वर के नाम की स्तुति हो! हमें परिपूर्णता के किसी भी स्तर पर आने की कोई उम्मीद नहीं होती, जिसको हमारे परमेश्वर स्वीकृति देंगे, अगर यह उनके अनुग्रह से भरी व्यवस्था के मुताबिक नहीं होता, जिसके द्वारा हमारी अपरिपूर्णता हमारे उद्धारकर्ता की परिपूर्णता और उनके बलिदान से द्वारा ढक दी गई है, और हमारी क्रियाएँ हमारे इरादों और हृदय की इच्छाओं के अनुसार स्वीकार किए जाते हैं। 'Z'02-133` R3002:1 (Hymn 125) आमीन

## रात का गीत (6 अगस्त)

**नीतिवचन 14:12** ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक जान पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।

यह वचन सबके द्वारा अच्छे से याद किये जाने के योग्य है। इस वचन में सबक यह है कि हम स्वयं के मामलों में खुद का मार्गदर्शन करने और अपने मामलों के लिये खुद को राह दिखाने में सक्षम नहीं हैं; क्योंकि हमें दिव्य सलाह की आवश्यकता है। मनुष्य का न्याय भरोसा करने योग्य नहीं हो सकता, यहाँ तक की यदि उसके पास परिपूर्ण ज्ञान हो तब भी; लेकिन हम जानते हैं की हमारे ज्ञान और न्याय लेने की क्षमता में कमी है, तो यह स्पष्ट है कि, मनुष्य को बहुत से मार्ग ठीक और बुद्धिमानी से भरे और लाभदायक और चाहने योग्य लगते हैं, लेकिन यदि वो उस मार्ग के पीछे लगा रहे, तो निश्चय उसका चुना हुआ मार्ग उसे निराशा और आक्रोश और अंत में मृत्यु - दूसरी मृत्यु की ओर ले जायेगा। इसलिये सब के लिये बुद्धिमान, उचित मार्ग यह है कि, हम अपनी खुद की कमी, मूर्खता को महसूस करें और स्वीकार करें, और मार्गदर्शन के लिये हमारे महान सृजनहार की ओर देखें। जिन लोगों ने वचन में दी गई आज्ञा - "अपनी जवानी के दिनों में अपने सृजनहार को स्मरण रख", का पालन किया है, वे लोग खुश हैं। जितना जल्दी इस सही मार्ग पर चलना आरम्भ किया जायेगा, रास्ते में परिणाम उतने ही बेहतर होंगे, हमारे लिये अपनी इच्छा

को प्रभु की इच्छा के प्रति मोड़ना उतना ही आसान होगा; और प्रभु के मार्गदर्शन से मिले पाठ और संतुष्टि और शांति और अधिक बहुमूल्य होंगे। प्रभु के प्रति हृदय का और जीवन का और हमारी सभी रुचियों का पूरा समर्पण करना, ताकि सब वस्तुओं में प्रभु की इच्छा ही की जा सके, यही एक ऐसा समर्पण है, जो हर एक धर्मी ठहराए गए विश्वास के घराने के सदस्य को, मसीह की देह जो की कलीसिया है, की संगती में लाने के लिये अत्यंत आवश्यक समर्पण है। 'Z'03-351' R3241:1 (Hymn 12)

आमीन

## रात का गीत (7 अगस्त)

**मत्ती 5:14 तुम जगत की ज्योति हो।**

बड़ी मात्रा में पवित्र आत्मा रखने के लिए, हमें अवश्य प्रभु के निकट रहना चाहिए, क्योंकि यदि हम उनसे दूर हो जाते हैं, तो प्रकाश बाहर निकल जाएगा। यदि हम प्रभु पर ध्यान करने में असफल होने के कारण, प्रार्थना के विशेषाधिकार की या पवित्रशास्त्र के अध्ययन की या प्रभु के साथ संगती की उपेक्षा करते हैं, तो आत्मा की रोशनी मंद हो जाएगी। दूसरी ओर, यह रोशनी हमारी अपनी कमियों के हमारे अहसास और प्रभु के प्रति हमारे समर्पण के अंश के अनुपात में उज्ज्वल होती जाएगी। जिस जोश

के साथ हम परमेश्वर की इच्छा को पढ़ते हैं, जिसे उनके वचनों में व्यक्त किया गया है, और जिस जोश के साथ हम उनकी इच्छा का पालन जीवन के सारे मामलों में करते हैं, उस जोश के माध्यम से हम अपनी रौशनी को दूसरों के सामने प्रगट करते हैं। ये ऐसे साधन हैं, जिनके द्वारा हम अपने प्रकाश को तेज रखने के लिए तेल की आपूर्ति कर सकते हैं। `Z'03-351` R3241:1 (Hymn 12) आमीन

### रात का गीत (8 अगस्त)

1 यूहन्ना 5:1 जिसका यह विश्वास है कि यीशु ही मसीह है, वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है; और जो कोई उत्पन्न करनेवाले से प्रेम रखता है, वह उससे भी प्रेम रखता है जो उससे उत्पन्न हुआ है।

जो कोई भी पिता से प्रेम रखता है, वह पुत्र से भी अवश्य प्रेम रखे, जो पिता का प्रतिरूप हैं और जिन्होंने देह में पिता के महिमामय चरित्र को प्रगट किया है। जैसे पुत्र ने पिता से प्रेम रखा और उनसे प्रार्थना की, और ये महसूस किया कि, उन्हें केवल अपने पिता का काम करना है। और अन्ततः अपने पिता की इच्छा को पूरी करने में अपनी जान दे दी -- जिस कार्य के लिए पिता ने उन्हें भेजा था -- और हम जिनका सिर मसीह है और जो अपने प्रिय उद्धारकर्ता की आत्मा से भरे हैं, उन्हें भी प्रभु यीशु मसीह के जैसा ही करना है। हम जो मसीह के शरीर के सदस्य हैं हमें



पिता और उनकी इच्छा के प्रति वैसा ही पवित्र डर रखना है, जैसा की प्रभु यीशु ने रखा। इजराइल का देश, प्रभु से पूरे हृदय, पूरे प्राण और पूरे सामर्थ्य से प्रेम नहीं रख सका; क्योंकि प्रभु से प्रेम रखने को एक निजी और व्यक्तिगत मामला समझा जाना चाहिए। उसी प्रकार कलीसिया, आत्मिक इजराइल को प्रभु से पूरे हृदय, पूरे प्राण और पूरे सामर्थ्य से प्रेम करने के लिए नहीं बुलाया गया है, बल्कि इसके अलग अलग लोगों को, व्यक्तिगत रूप से, जो की प्रभु के हैं, उनको उनसे प्रेम करने के लिए बुलाया गया है। ये लोग उनमें से हैं जो प्रभु को खुश करने की, उनकी सेवा करने की, प्रभु की इच्छा के प्रति आज्ञाकारी होकर अपने जीवन को बलिदान करने की और जिन दिव्य उपदेशों के लिए उन्हें बुलाया गया है, उसके अनुसार वैसा ही करते हुए आगे बढ़ने की कोशिश करते हैं। `Z'07-264` R4052:2 (Hymn 240) आमीन

## रात का गीत (9 अगस्त)

**लूका 17:32 लूत की पत्नी को स्मरण रखो।**

हमारा मानना है कि अब कुछ लोग ऐसे हैं जिन्हें हमारे प्रभु द्वारा संदर्भित इस विशिष्ट घटना की छाया के असलियत पर ध्यान देने की आवश्यकता है। दिव्य निंदा के तहत आने वालों के साथ सहानुभूति रखने और बंधुआई करने के लिए काफी संख्या में लोगों को पाया जाता है। संत यहूदा के

द्वारा हमें बताया गया है कि सदोम का नष्ट होना हमारे लिये "एक दृष्टान्त ठहरा है"। जो लोग प्रभु की तुलना में अधिक दयालु या लंबे समय तक सहने वाले बनते हैं, वे खुद को परमेश्वर का विरोधी बनाते हैं, वे धार्मिकता के सिद्धांतों के छात्र होने के बजाय, यहोवा के न्यायाधीश और शिक्षक होने का प्रयास करते हैं। हृदय का उचित नजरिया परमेश्वर के फैसलों को न केवल समझदार के रूप में स्वीकार करता है, बल्कि हमारे खुद के फैसलों से अधिक न्यायपूर्ण मानता है। परिणामस्वरूप जब हम किसी ऐसे व्यक्ति को देखते हैं जिसने वर्तमान सत्य के प्रकाश का आनंद लिया है, और उसको प्रभु ने त्याग दिया और वह बाहरी अंधकार में चला गया, तो हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि इस प्रकार प्रभु के द्वारा त्यागे जाने से पहले उनमें अवश्य ही "बुरा और अविश्वासी मन रहा होगा, जिसने उन्हें जीवते परमेश्वर से दूर किया होगा"। `Z'16-261` R5948:3 (Hymn 161) आमीन

## रात का गीत (10 अगस्त)

**1 थिस्सलुनीकियों 5:4 पर हे भाइयों, तुम तो अन्धकार में नहीं हो, कि वह दिन तुम पर चोर के समान आ पड़े।**

प्रिय भाइयों, परमेश्वर के प्रति, हमारा वर्तमान रवैया महान कृतज्ञता का होना चाहिए, हमें उस सुंदर सत्य की अधिक प्रशंसा करनी चाहिए जिसे

परमेश्वर ने हमें देखने और जिसके द्वारा पहचाने जाने का विशेषाधिकार दिया है, और दूसरों को इस सत्य के ज्ञान में लाने के लिये मदद करने का बढ़ता हुआ जोश होना चाहिए। इस बीच, हमारी समझ की आँखों को स्पष्ट रूप से, सर्वशक्तिमान परमेश्वर के महान दिन के युद्ध को, जो अभी जारी है, देखना चाहिए; और हमारे विश्वास को, वचन के द्वारा हमारी समझ की आँखों का मार्गदर्शन करके, हमें इस युद्ध के महिमामय परिणाम - मसीहा के राज्य को देखने में सक्षम करना चाहिए। इसके अलावा बिना यह जाने की कटनी का समय कब तक रहने वाला है, हम पूरी तरह से संतुष्ट हो सकते हैं - इस बात से संतुष्ट हो सकते हैं कि हमारे महान कप्तान, जिनकी दिव्य नियुक्ति हुई है, पूरा मामला उनकी निगरानी में है, वे अति बुद्धिमान हैं, कोई गलती नहीं कर सकते हैं, और उन्होंने हमसे वादा किया है कि, यदि हम उनसे प्रेम करते हैं और उनके उद्देश्यों के अनुसार बुलाये गए हैं, यदि हम अपने बुलावे और चुनाव को पक्का करने की खोज में हैं, तो सभी अनुभव मिलकर हमारे लिये भलाई ही को उत्पन्न करेंगे। `Z'16-265` R5951:4 (Hymn 289) आमीन

**रात का गीत (11 अगस्त)**

**भजन संहिता 89:15 क्या ही धन्य है वह समाज जो आनन्द के ललकार को पहिचानता है; हे यहोवा, वे लोग तेरे मुख के प्रकाश में चलते हैं।**

हमारे प्रभु ने इशारे वाली भाषा में इस तथ्य को बताया है की, सुसमाचार युग के अन्त के दिनों में प्रभु के अनुग्रह का संदेशा, उस सन्देशे से जिसे साधारण तौर पर लोग स्वीकार करते हैं, और जिसे सुसमाचार का गलत नाम दिया गया है, इतना अलग होगा, कि प्रभु के सुसमाचार के संदेशे को उचित रूप से नए गीत का नाम दिया गया है, हालाँकि यह मूसा का पुराना गीत है - यह आशीष का संदेशा है जिसे छाया में मूसा की लिखावटों और व्यवस्था की सभी विधियों में बताया गया था; ... और यह संदेशा परमेश्वर के मेमने और "जगत के पापों को ले जाने" में जो बड़ा कार्य मेमने के द्वारा पूरा किया जायेगा उससे सम्बंधित, सभी प्रेरितों के द्वारा दी गई गवाहियाँ है। यह वही गीत है जिसे अभी वे सब लोग गा रहे हैं जिन्हे परमेश्वर ने वर्तमान सचाई के ज्ञान की आशीष दी है - यह "आनन्द की ललकार" है, जिसे केवल इस प्रकार से आशीषित लोग ही जानते हैं या गा सकते हैं ... हमारा ये वचन यह बताता है कि उन लोगों में से होने के लिये जो "आनन्द के ललकार" की ध्वनि को जानते हैं, परमेश्वर के मुख के प्रकाश में चलना आवश्यक है। या, इस वचन के क्रम को यदि बदल दिया जाये, तो यह विचार होगा कि सभी जो परमेश्वर के मुख के प्रकाश में चलते हैं, वे उनके धन्य लोग होंगे, और वे आनन्द के ललकार की ध्वनि को जान पाएंगे। `Z'00-37` R2569:6 (Hymn 315) आमीन

## रात का गीत (12 अगस्त)

रोमियो 5:1 इसलिये जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें।

यह वचन उनमें से किसी के लिये भी लागु नहीं होगा जो समर्पण और स्वीकारे जाने के कदम तक नहीं पहुँचे हैं और जो केवल तम्बू के आँगन में ही हैं। हालाँकि, इन लोगों के पास, जिस अनुपात में वे आगे बढ़ रहे हैं, उसके अनुसार कुछ मात्रा में परमेश्वर के साथ मेल है। कुछ मात्रा में शांति और आनंद यह जानकर आती है कि परमेश्वर के पास वापस जाने का एक तरीका है, पाप को दूर करने का प्रयास करके और इस प्रकार से परमेश्वर के निकट आकर; लेकिन इस वचन में प्रेरित के द्वारा कलीसिया के जिस मेल या शांति की बात की गई है, वह केवल उनपर लागु होती है, जो परमेश्वर का पुत्र होने की अवस्था में आये हैं। कलीसिया के सदस्यों को छोड़कर परमेश्वर और किसी भी अन्य लोगों के साथ मेल में नहीं हैं।

`Z'16-281` R5960:1 (Hymn 182) आमीन

## रात का गीत (13 अगस्त)

लूका 17:5 प्रेरितों ने प्रभु से कहा, हमारा विश्वास बढ़ा।

यदि हमारा यह भरोसा है की, हम इस युग की कटनी के समय में हैं, और यह कि कटनी का कार्य चल रहा है, और हम इस कटनी में भाग लेनेवालों में से हैं, तो आइये हम यह भी भरोसा रखें की महान प्रधान काटनेवाले, हमें उनके कटनी के कार्यों में उपयोग में लाने और आशीष देने में पूरी तरह से सक्षम हैं। और आइये हममें से कोई भी बादलों और निराशाओं को नहीं देखे, बल्कि आइये हममें से प्रत्येक को जो काम उसे मिले, उसे वह अपनी शक्ति भर करे, विश्वास की आँखों से हमारे कप्तान, "यीशु की ओर ताकते रहें", और यह निश्चय कर ले कि, चाहे हम बहुतों को राज्य में ला पाएँ या न ला पाएँ, परन्तु हमारे राजा के पास कम से कम हमारे द्वारा दूसरों को राज्य में लाने के लिये, हमारे प्रेम और जोश और प्रयत्न की गवाही होनी चाहिए। `Z'99-205` R2513:4 (Hymn 232) आमीन

### रात का गीत (14 अगस्त)

**मत्ती 4:11 तब शैतान उसके पास से चला गया, और देखो, स्वर्गदूत आकर उस की सेवा करने लगे।**

हमारे प्रभु ने अपने मिशन को अंजाम देने के हर दूसरे तरीके से, जो कि पिता के बताये हुए तरीके यानि आत्म-बलिदान के मार्ग, सकेत मार्ग से अलग था, पूरी तरह से इनकार कर दिया, और ऐसा करना उनके लिये

वास्तव में एक महान जीत थी। विरोधी शैतान ने प्रभु यीशु को छोड़ दिया, क्योंकि उसने प्रभु में ऐसा कुछ भी नहीं पाया जिसे वह पकड़ सकता या जिसपर वह काम कर सकता था, क्योंकि प्रभु यीशु, यहोवा की आत्मा और उनके वचनों के प्रति पूरी तरह से वफादार थे। और उसके बाद, जब प्रभु यीशु की परीक्षाएँ खत्म हो गयीं, तब पवित्र स्वर्गदूत आये और उनकी सेवा करने लगे - निःसंदेह वे उनको तरोजा करने के लिये वह सब प्रदान कर रहे होंगे, जिसे पाने के लिये प्रभु ने खुद के लिये दिव्य शक्ति को उपयोग में लाने से इंकार कर दिया था। और ऐसा ही अनुभव प्रभु के चेलों को भी होगा: विजय के साथ प्रभु के पास से आशीष आती है, आत्मा की संगती, हृदय की तरोजगी, दिव्य अनुग्रह का अहसास होता है, जो हमें अगली परीक्षा के लिये और मजबूत करता है। `Z'00-32` R2568:4 (Hymn 65) आमीन

### रात का गीत (15 अगस्त)

**यूहन्ना 4:23 सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही आराधकों को ढूँढ़ता है।**

आत्मा और सच्चाई से प्रार्थना करने का मतलब केवल प्रार्थना, स्तुति, याचना और धन्यवाद करना नहीं है। सच्चाई और आत्मा से आराधना करना इन सब से बहुत गहरा है और इसकी पकड़ हमारे मन के लगाव,

हमारे हृदय पर होती है, और इसीलिये यह "आराधना की क्रिया" को नहीं दर्शाता है, बल्कि आराधना के जीवन को दर्शाता है - एक ऐसा जीवन, जिसमें आत्मा से उत्पन्न होने और दिव्य योजना के ज्ञान के द्वारा, वह व्यक्ति परमेश्वर के साथ इस प्रकार से एक मन हो जाता है और परमेश्वर की व्यवस्था और परमेश्वर की योजना के सभी पहलुओं के साथ इतना मेल रखता है कि, जैसा की हमारे प्रभु यीशु ने कहा था, पिता की इच्छा करना ही उसका खाना और पीना होता है। यही आत्मा और सच्चाई में प्रार्थना करना है। इस तरह की आराधना की अभिव्यक्ति घुटने टेक कर और निजी प्रार्थना में, पारिवारिक प्रार्थना में और विश्वास के घराने की संगती में, श्रद्धा और भक्ति का व्यवहार रखते हुए परमेश्वर के पास जाकर की जाती है। और इस तरह की आराधना की अभिव्यक्ति जीवन की सभी क्रियाओं और बातों में भी पाई जाती है। प्रभु में बंदी हृदय अपनी देह की सभी प्रतिभाओं को परमेश्वर और मसीह की इच्छा के अनुसार पूरी तरह से ढालने की खोज में रहेगा। यह सब मिलाकर ऐसी आराधना है जिसे परमेश्वर खोजते हैं; और, निश्चय, केवल वही जिनके हृदय प्रभु में इस प्रकार से बंदी हैं, और जो उनकी सेवा आत्मा और सच्चाई से करते हैं और अपने मन और हृदय में, बातों में और आचरण में प्रभु की इच्छा को पूरा करने का भरसक प्रयास करते हैं, वही लोग पुरे अर्थों में सच्चे आराधकों में आते हैं, जिन्हें प्रभु ढूँढ़ रहे हैं; यानि "छोटी झुण्ड", विश्वासी "शाही याजक"। `Z'96-287` R2071:6 (Hymn 202) आमीन



## रात का गीत (16 अगस्त)

**भजन संहिता 122:6 यरूशलेम की शान्ति (के लिये प्रार्थना करो) का वरदान मांगो!**

यह वचन जितना आत्मिक यरूशलेम और उसके शांति के बच्चों के लिये सच्चा है, उतना ही पृथ्वी के यरूशलेम के लिये भी सच्चा है। जो लोग प्रभु के कारणों पर उनकी आशीष के लिये प्रार्थना करते हैं, वे प्रभु के कारणों की सेवा करने की खोज में हैं, और उसी अनुपात में उन्हें आशीष मिलती है। जो लोग सियोन के कल्याण के प्रति और प्रभु के कारणों के प्रति उदासीन हैं, वे अब फिसलन की जगह में खड़े हैं, और उनके गिरने का बहुत बड़ा खतरा है.... जब हम अपनी जरूरतों को याद करते हैं तो यह हमें विनम्र रखता है, और जब हम प्रभु की पर्याप्तता और हमारी प्रार्थनाओं के जवाब में प्रभु के आशीष देने की इच्छा को याद करते हैं, तो यह हमें मजबूत बनाता है। ये प्रार्थनाएँ और जो दिव्य शक्ति इन प्रार्थनाओं के साथ जुड़ी है, यह हमारे हृदय के लिये एक चारदीवारी के समान है, जो प्रभु और उनके वचन के प्रति हमारी वफ़ादारी के कारण, शैतान के द्वारा अंधे किये गए बहुत से शत्रुओं के विरुद्ध, जो लगातार हमें चारों ओर से घेरते हैं, उससे हमारा बचाव करती हैं। `Z'00-47` R2576:2 (Hymn 18)

आमीन

## रात का गीत (17 अगस्त)

1 यूहन्ना 3:18 हे बालकों, हम वचन और जीभ ही से नहीं, पर काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें।

यह एक व्यक्तिगत मामला है। हम में से हर एक इस परीक्षा के अंतर्गत है। यदि अभी तक नहीं, तो जल्दी या बाद में, निस्संदेह, भाइयों के हितों के लिये बलिदान करने की यह इच्छा, हममें से हर एक को हमारी वाचा के प्रति वफादार, विश्वासी या अविश्वासी साबित कर देगी। आइए हम भाइयों के लिए प्रेम और भाइयों के लिये अपने जीवन को बलिदान करने के इस मामले को अपने निजी अध्ययन का मामला माने और व्यवहारिक तौर पर इसे अपने हृदय, मन, विचारों, शब्दों और क्रियाओं पर लागु करें। और आइये हम एक दूसरे के लिए प्रार्थना करें, साथ ही साथ इन पंक्तियों के साथ एक-दूसरे को प्रेरित करें, हमारे स्वामी की आत्मा से भरे होने का प्रयास करें। `Z'16-261` R5948:5 (Hymn 166) आमीन

## रात का गीत (18 अगस्त)

2 पतरस 3:17 इसलिये हे प्रियो, तुम लोग पहले ही से इन बातों को जान कर चौकस रहो, ताकि अधमियों के भ्रम में फँसकर अपनी स्थिरता को कहीं हाथ से खो न दो।

सभी जो दूसरों को दिव्य योजना सिखाना चाहते हैं, वे अजीबोगरीब प्रलोभनों के संपर्क में आते हैं, ताकि प्रभु और उनके लोगों की सेवा करने के आदर के लिये, उसी के अनुसार अत्यधिक मात्रा में पवित्र आत्मा के अनुग्रहों की, तथा साथ ही साथ में ज्ञान की भी आवश्यकता हो। जैसा की प्रेरित बताते हैं, ज्ञान की प्रवृत्ति, केवल फुलाना है, व्यर्थ की कल्पना करना और घमण्ड उत्पन्न करना है, और कुछ लोग विरोधी शैतान के प्रलोभन में आकर, चेलों अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी मेढ़ी बातें कहेंगे। (प्रेरितों 20:30) इसलिए जो कोई भी दूसरों को सिखाने वाला, प्रभु का एक प्रवक्ता बनना चाहता है, उसे पवित्र आत्मा के सभी विभिन्न प्रकार के अनुग्रहों में उन्नति करनी चाहिए, जिसमें नम्रता भी शामिल है; ज्ञान के साथ ये (प्रेम) मिलकर, उसकी खुद की उन्नति के साथ-साथ, उन लोगों की भी उन्नति करने में मदद करता है, जिनका वह सेवक होता है। "(केवल) ज्ञान घमण्ड उत्पन्न करता है, परन्तु प्रेम से उन्नति होती है।" `Z'16-261` R5948:5 (Hymn 166) आमीन

**रात का गीत (19 अगस्त)**

**हाग्वै 2:4 हे देश के सब लोगो हियाव बान्ध कर काम करो, क्योंकि मैं तुम्हारे संग हूं, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है।**

प्रभु पर भरोसा रखने वाले सभी लोग उनके इस आश्वासन पर भरोसा कर सकते हैं कि, प्रभु के पास अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सभी चीजें हैं। "प्रभु अपनों को पहचानता है।" इसलिए, इस वचन की भाषा में, आइये हम सब हियाव बान्ध कर काम करें; क्योंकि परमेश्वर हमारे साथ है; हम उनके साथ केवल सहकर्मी हैं। परमेश्वर उस महान कार्य को निश्चित रूप से पूरा करेंगे, जिसका उन्होंने वादा किया है; आत्मिक मंदिर बनाया जाएगा; लेकिन इसके संबंध में हमारी व्यक्तिगत आशीष उसी अनुपात में होगी, जितना हम प्रभु में मजबूत और विश्वास से भरे और जोश से भरे हुए होंगे, उनके साथ सह-कार्यकर्ता के रूप में। 'Z'99-221' R2521:4 (Hymn 210) आमीन

## रात का गीत (20 अगस्त)

**यशायाह 61:1 यहोवा ने मुझे इसलिये भेजा है कि खेदित मन के लोगों को शान्ति दूं।**

अभिषेक किये हुए लोगों को अपना समय सांसारिक लोगों के कठोर दिलों को तोड़ने के लिए नहीं बिताना है, क्योंकि यह उनकी नियुक्ति का हिस्सा नहीं है ... इस वचन के संदेश के अनुसार हमें "खेदित मन के लोगों को शान्ति देना है"। इस काम का कितना हिस्सा है जिसे करने की ज़रूरत है! दुनिया के लगभग हर चौथाई हिस्से में मन के दीन, टूटे मनवाले,

दुनिया से निराश, शरीर और शैतान के सताए हुए लोग पाए जाते हैं; और जिस किसी ने भी पवित्र आत्मा का अभिषेक पाया है, उसे इसकी सामर्थ्य को अपने ऊपर महसूस करना चाहिए, और यह जानना चाहिए की उसे यह सामर्थ्य जरूरतमंद वाले समूह के लोगों के ऊपर अभ्यास में लाने के लिये दी गई है - उन्हें उनपर दिव्य वादों का दाखरस और तेल उंडेलना है, उन्हें प्रसन्न करने और आराम देने और आशीष देने के लिये, और इनमें से कुछ लोगों को जिन्हें प्रभु प्रसन्नता से स्वीकारेंगे, उनकी प्रभु के राज्य में साँझा वारिस बनने की तैयारी के लिये मदद करनी है। 'Z'00-55` R2580:2 (Hymn 73) आमीन

### रात का गीत (21 अगस्त)

**भजन संहिता 46:10 चुप हो जाओ, और जान लो, कि मैं ही परमेश्वर हूँ।  
मैं जातियों में महान हूँ, मैं पृथ्वी भर में महान हूँ!**

इस वचन में यह आज्ञा कि "चुप हो जाओ", उस धीमी सी आवाज से सम्बन्ध रखती है जिसे एलिय्याह ने सुना था - जिसे अभी हम एलिय्याह के छाया की असलियत के रूप में परमेश्वर के वचन से सुन रहे हैं, अर्थात्, न तो सांसारिक बल से, और न सांसारिक शक्ति से प्रभु अपना शासन स्थापित करेंगे, बल्कि आने वाले समय में उनके राजा सिय्योन में राज्य करेंगे और पूरी पृथ्वी भर का न्याय करेंगे, धर्मी को इनाम देंगे और दुष्ट

को दण्ड देंगे, और परिणाम स्वरूप सबसे छोटे से लेकर सबसे बड़ा तक प्रभु के ज्ञान में बढ़ जायेगा; कि पूरी पृथ्वी यहोवा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसे समुद्र जल से भर जाता है; और इसके बाद यह भी होगा कि, प्रभु अपनी आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलेंगे, जैसा कि उन्होंने अपने मुख से वादा किया है। `Z'04-249` R3414:6 (Hymn Appendix R) आमीन

### रात का गीत (22 अगस्त)

इफिसियों 4:15,16 वरन प्रेम में सच्चाई से चलते हुए, सब बातों में उसमें जो सिर है, अर्थात् मसीह में बढ़ते जाएं। जिससे सारी देह, हर एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर और एक साथ गठकर, उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक अंग के ठीक - ठाक कार्य करने के द्वारा उस में होता है, अपने आप को बढ़ाती है, कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए।

यहाँ पर प्रेरित पौलुस की सोच ये प्रतीत होती है कि, प्रत्येक नई सृष्टि को प्रभु यीशु मसीह के आत्मिक देह का पूरा सदस्य माना जाता है, और हमारे चरित्र में मसीह के चरित्र का हर एक गुण हो, ताकि हमारे अन्दर हर एक गुण प्रेम की आत्मा के द्वारा अच्छे से प्रभाव में आये, इसके अतिरिक्त, सब जो नई सृष्टि हैं उनको अपने आप को ये पहचानना है कि, वे एक दूसरे के अंग हैं, मसीह की देह के अंग हैं, कलीसिया के अंग हैं, और उनको एक दूसरे के प्रति उनके अलग अलग प्रयासों में एक दूसरे

का सहयोग करना है, और परमेश्वर की इच्छा के प्रति आज्ञाकारी होने का अभ्यास करना है, ऐसा प्रेम, ऐसी मलहम, ऐसा अभिषेक और ऐसी चिकनाई के द्वारा की वे एक दूसरे का विरोध करने से इन्कार करें, और इस तरह से मसीह के देह के अंग के रूप में एक दूसरे का अनुग्रहों के फलों में बढ़ने में सहयोग करें, ताकि मसीह की देह के सदस्यों की संख्या पूरी हो सके। `Z'97-295` R2227:5 (Hymn 198) आमीन

### रात का गीत (23 अगस्त)

**गलातियों 5:25 यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी।**

प्रेरित बताते हैं कि जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उस की लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है। उन्होंने स्वेच्छा से सहमति व्यक्त की है कि वे पाप में गिरे हुए शरीर की भावनाओं और इच्छाओं के विपरीत जियेंगे। प्रेरित यह विनती करते हैं कि यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी। यह परमेश्वर की आत्मा है जिसने हमें जिलाया है और जो अंततः हमें सिद्ध भी करेगी। लेकिन परमेश्वर की आत्मा हमें तभी सिद्ध कर सकती है जब हम आत्मा के अनुसार उनके मार्गों में चलें। अन्यथा हम राज्य में एक स्थान पाने के लिए योग्य नहीं होंगे, फिर चाहे परमेश्वर के प्रबंध में जो भी अन्य जगह

हमें मिले। मसीहियों के सबसे खतरनाक घेराओं में से एक है व्यर्थता। यह अधिक परेशानी की ओर जाता है, आमतौर पर होनेवाले की तुलना में अधिक झगड़े और ईर्ष्या और भड़काने का कार्य करता है। यदि हम अपने स्वामी की आत्मा के अनुसार चलेंगे तो इसका मतलब होगा कि व्यर्थ की महिमा के पीछे जाने की बजाये हम नम्र, दीन और सिखाये जानेवाले स्वभाव के बनेंगे। और केवल इस तरह के ही लोग अंततः महिमा, आदर और अमरता के लिए तैयार हो पायेंगे, जिसे परमेश्वर हमारे प्रभु और रक्षक यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर अपने विश्वासी लोगों को देंगे।  
'Z'10-302' R4688:4 (Hymn 91) आमीन

### रात का गीत (24 अगस्त)

भजन संहिता 30:5 क्योंकि उसका क्रोध, तो क्षण भर का होता है, परन्तु उसकी प्रसन्नता जीवन भर की होती है। कदाचित् रात को रोना पड़े, परन्तु सबेरे आनन्द पहुंचेगा।

अद्भुत दिन के इस सबेरे के ज्ञान के दृष्टिकोण से, जो अब निकलने ही वाला है, हम जो उस दिन के राज्य के समूह के लोग होने की उम्मीद कर रहे हैं, हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए? हमें कैसे जीना चाहिए? अहा! प्रेरित कहते हैं, यदि हम "दिन की सन्तान" हैं, तो हमें उसके समान चाल चलकर दिखाना है। हम परमेश्वर के प्रतिनिधि और राजदूत हैं। हमें



परमेश्वर की रौशनी और ज्ञान और महिमा जो जल्द ही प्रगट होनेवाली है, और जिससे जल्द ही पूरी पृथ्वी भर जायेगी, उसके बारे में लोगों को बताना है। हमें वर्तमान समय की परिस्थितियों की तुलना, उस समय में मौजूद महिमामय परिस्थितियों से करने में उनकी मदद करनी है, ताकि रौशनी से प्रेम करने वाले सभी लोग, परमेश्वर के वचन पर ध्यान दें और उस राज्य के समूह का सदस्य बनने के लिए तैयार हो सकें.... आइये हम यह याद रखें कि हम नए युग के हैं, पुराने युग के नहीं हैं, और इसलिये, हमें उस युग की नागरिकता और ज्योति के राजकुमार के प्रति अपनी जिम्मेदारियों के अनुसार जीना है, और अंधकार के हाकिम, उसके कार्यों और उसके मार्गों का विरोध करना है। 'Z'13-325` R5339:5 (Hymn 289) आमीन

**रात का गीत (25 अगस्त)**

**भजन संहिता 92:1 यहोवा का धन्यवाद करना भला है, हे परमप्रधान, तेरे नाम का भजन गाना।**

दुनिया में लाखों लोग हैं जिन्होंने परमेश्वर की सुन्दर दिव्य योजना के बारे में कभी नहीं सुना है; इसलिए हमें हमारे मुँह को परमेश्वर की प्रशंशा करने के लिए उपयोग में लाना चाहिए। हमें परमेश्वर को हर समय याद करना चाहिए, हमारे आराम के क्षणों में, चाहे हम बिस्तर पर हों या जहाँ

कहीं भी हों। परमेश्वर की महान और पवित्र व्यवस्थाएँ उनमें अभिव्यक्ति पाती है। हमें परमेश्वर के बारे में ऐसा सोचना है की, वे चरित्र और सिद्धान्त में उन सभी वस्तुओं का साकार रूप हैं, जो न्यायपूर्ण हैं, स्नेहमय हैं, दयालु हैं, बुद्धिमान हैं। इससे हमको उनके समान बनने का प्रोत्साहन और प्रेरणा मिलना चाहिए। जितना अधिक हम एक श्रेष्ठ चरित्र की सराहना करते हैं, उतना ही अधिक हम उसका अनुकरण करना चाहते हैं। जितना अधिक हम इस प्रकृति में किए गए परमेश्वर के सामर्थ्य से भरे कार्यों को और हमारे प्रति उनकी करुणा को देखते हैं, उसी अनुपात में हमारे हृदय और होंठ उनकी स्तुति करेंगे। यदि इस ऊपर के वचन में कोई भविष्यद्वाणी का विचार जुड़ा है, तो वह यह है कि, पुरे अंधकार के युग के दौरान, इस युग के पुरे रात के समय के दौरान, परमेश्वर के विश्वासी लोग उनकी प्रशंशा करते रहे हैं। परमेश्वर के सभी सच्चे लोग हमेशा उनकी स्तुति करते आये हैं और उन्होंने ऐसा आनन्द से भरे होठों के साथ किया है। जो परमेश्वर की स्तुति नहीं कर रहे हैं, वे छोटी झुण्ड के विभाग के लोग नहीं हैं। इसलिए हमें अपने परमेश्वर की प्रशंसा अवश्य करनी चाहिए। हमें ज्यादा से ज्यादा परमेश्वर की पवित्र इच्छा और उनके पवित्र मार्गों पर ध्यान करना चाहिए, और कोशिश करनी चाहिए की हम भी अपने आपको उसके अनुसार ढाल लें। इस प्रकार से हम अधिक से अधिक अपने पिता के समान बनेंगे, जो स्वर्ग में हैं। 'Z'15-312' R5785:5 (Hymn 235) आमीन

## रात का गीत (26 अगस्त)

**इफिसियों 2:7** कि वह अपनी उस कृपा से जो मसीह यीशु में हम पर है, आने वाले समयों में अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए।

अनुग्रह और महिमा का यह असीम धन, यहां तक कि सबसे कमजोर संत की संभावित विरासत है, जो अपने बुलावे और चुनाव को सुनिश्चित करने के लिये अपनी क्षमता पर भरोसा नहीं करता है, बल्कि विनम्रतापूर्वक एक अच्छे योद्धा के रूप में कठोरता को सहन करने के लिए दिन-प्रतिदिन बल पाने के लिए परमेश्वर को देखता है। यदि कोई भी व्यक्ति अपने बल में ऐसा करने का प्रयास करता है, तो वह निश्चित रूप से असफल हो जायेगा, क्योंकि जो अग्निमय परीक्षा सब को परखने वाली है, वह शारीरिक मन के लिये बहुत अधिक साबित होगी; लेकिन परमेश्वर जो अपनी सुइच्छा निमित्त समर्पित लोगों के मन में इच्छा और काम दोनों करते हैं, वह जो परमेश्वर के अनुग्रह पर निर्भर करते हैं, उनको इतना मजबूत और सामर्थी कर देंगे, कि भजन - संहिता लिखने वाले के साथ वे कह सकते हैं, "यह वही ईश्वर है, जो सामर्थ से मेरा कटिबन्ध बान्धता है ... तेरी सहायता से मैं सेना पर धावा करता हूं; और अपने परमेश्वर की सहायता से शहरपनाह को लांघ जाता हूं।"; और पौलुस के साथ कह सकते हैं, "मसीह जो मुझे सामर्थ देता है उस में मैं सब कुछ कर सकता हूं।" `Z'97-146` R2154:3 (Hymn 261) आमीन

## रात का गीत (27 अगस्त)

मरकुस 5:19 अपने घर जाकर अपने लोगों को बता कि तुझ पर दया करके प्रभु ने तेरे लिये कैसे बड़े काम किए हैं।

आह, ताकि हम सब सावधान रहें, और इस तरह से परमेश्वर के अनुग्रह के विश्वासी भण्डारी रहें, और अपने महान उद्धारकर्ता के विश्वासी प्रतिनिधि हो पाएं - हमें केवल अपने होठों से गवाही नहीं देनी है, बल्कि जीवन के सारे मामलों में हमें गवाही देनी है की हम अभी मानसिक रूप से स्वस्थ हैं, और हमारे पास संयम दिमाग की आत्मा है, कि हम उन चीज़ों से प्रेम करें, जो सही हैं और सच्ची हैं और सर्वोत्तम हैं और अच्छी हैं, और हम उन चीज़ों से नफ़रत करें और उन चीज़ों के विरोध में रहें जो पाप हैं, जो प्रभु के मन के विपरीत हैं और धार्मिकता के मार्ग के विरुद्ध हैं! `Z'06-143` R3773:5 (Hymn 118) आमीन

## रात का गीत (28 अगस्त)

2 इतिहास 14:11 हे हमारे परमेश्वर यहोवा! हमारी सहायता कर, क्योंकि हमारा भरोसा तुझी पर है।

दुनिया को अपनी लड़ाई लड़ने दें: प्रभु उनकी निगरानी करेंगे और परिणाम अंततः महिमामय होगा। आइए हम जो नए देश के हैं, जो नए राज्य के हैं, जो कि इस संसार का नहीं हैं, जो किसी भी तरह के शारीरिक हथियारों का उपयोग नहीं करते हैं, लेकिन आत्मा की तलवार का उपयोग करते हैं - आइये हम विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़ें, पहले से निर्धारित महिमामय वस्तुओं को कसकर थामे रहें, और न केवल खुद को खड़ा रखें, बल्कि उन सब को भी खड़े रहने में मदद करें जो एक ही आत्मा से उत्पन्न हुए हैं और उसी स्वर्गीय सेना के सदस्य हैं, ताकि हम सब उसी में भरपूर हों जो देह के शिरोमणि हैं, हमारे उद्धार के कप्तान हैं। अपने सभी प्राणियों के प्रति परमेश्वर की प्रेमपूर्ण देखभाल उनके प्रिय पुत्र के महिमामय राज्य में प्रकट होगी, जो सामान्य रूप से मानव जाति को आशीष देगा और उनपर शासन करेगा, निर्देश देगा और उत्थान करेगा। "कराहती हुई सृष्टि" को फिर भ्रष्टाचार के बंधन से परमेश्वर के पुत्रों की महिमामय स्वतंत्रता में छुटकारा दिया जायेगा - इसलिए उनमें से बहुत से लोग आशीष को स्वीकार करेंगे। तब सभी देखेंगे कि परमेश्वर ने जगत से इतना प्रेम किया कि अपने एकलौते पुत्र को हमारे लिये मरने को दिया और इस प्रकार से अपने राज्य की आशीषों का मार्ग खोला। `Z'04-205` R3393:5 (Hymn 164) आमीन

## रात का गीत (29 अगस्त)

कुलुस्सियों 3:23 और जो कुछ तुम करते हो, तन मन से करो, यह समझकर कि मनुष्यों के लिये नहीं परन्तु प्रभु के लिये करते हो।

प्रभु अपने लोगों को किसी भी प्रकार के अंकुश से स्वतंत्र करते हैं; खतरों से स्वतंत्र करते हैं; मजबूरी से स्वतंत्र करते हैं; इस इरादे से कि वे अपने शरीर को दिन- प्रतिदिन जीवित बलिदान कर सकें। पहले की तरह अब भी, जो कोई ठंडा पड़ जाता है, वह अपने बलिदान को बंद कर सकता है, लेकिन इससे उसकी अपनी ही हार होगी। हमें अपने मन में स्पष्ट रूप से यह याद रखना है कि हालाँकि परमेश्वर पाप की निंदा करते हैं, और हालाँकि उनके लोगों के पास पाप के सम्बन्ध में कोई स्वतंत्रता नहीं है, बल्कि यह उनकी जिम्मेवारी है कि, वे पाप का विरोध करने का पूरा प्रयास करें, लेकिन बलिदान के मामले में बात दूसरी है। परमेश्वर का बुलावा स्वतंत्रत इच्छा से बलिदान करने के लिये है, न की किसी दबाव में, और यदि कुछ भी बिना मन के, बिना चाहत के, बिना जोश के भेंट में दिया जाये, तो इससे अच्छा है कि वह भेंट या बलिदान चढाई ही न जाये बल्कि अपने पास ही रख ली जाये - लेकिन जो ऐसा करेंगे वे उस वह इनाम को खो देंगे, जिसे देने का वादा उनसे किया गया है जो अपने स्वामी की आत्मा और उनकी भक्ति का अनुकरण करते हैं। 'Z'02-149'

R3009:2 (Hymn 299) आमीन

## रात का गीत (30 अगस्त)

**भजन संहिता 37:3 यहोवा पर भरोसा रख, और भला कर; देश में बसा रह, और सच्चाई में मन लगाए रह।**

जब हम प्रभु की भलाई के बारे में सोचते हैं जिसे आम तौर पर पूरी दुनिया पर अपने नियत समय में, मधुरता से करने का उन्होंने वादा किया है, और जब हम पीछे मुड़कर प्राचीन काल के लोगों पर जिन्होंने परमेश्वर पर भरोसा किया, उनकी अनुग्रहपूर्ण देखभाल देखते हैं, तब हमें अपने बारे में इस सुसमाचार के युग में क्या कहना चाहिए, जिनके पास हर प्रकार से पुराने समय के लोगों और आनेवाले युग के समय के लोगों, दोनों की तुलना में अधिक लाभ है, और वह यह है कि प्रभु के अनुग्रह से भरी योजना के ज्ञान और उनके परिवार में गोद लिये जाने के रूप में हमारे पास विशेष अनुग्रह और आशीष है। क्या हमें यह नहीं मानना चाहिए की परमेश्वर जो अतीत में सावधान थे, जो भविष्य में आशीष देकर प्रसन्न होंगे, वे अब हममें से हर एक पर अपनी संतान की तरह आशीषों को, विशेषकर आत्मिक आशीषों को, उन्हें पाने के लिये हमारी इच्छा और विश्वास के अनुसार, उंडेलने के लिए तैयार और इच्छुक हैं? जब हम पापी ही थे तब परमेश्वर ने हमसे इतना प्रेम किया कि हमें छुटकारा दिलाया, तो अब तो वे हमसे और अभी अधिक प्रेम करते हैं क्योंकि, हम क्षमा पा चुके हैं और उनके परिवार में स्वीकारे जा चुके हैं, और गोद लिये जा चुके

हैं और संभावित तौर पर हमारे प्रभु यीशु के साथ साँझा वारिस बनाये जा चुके हैं, तो क्या हम दिन प्रतिदिन प्रभु से निरंतर आशीष और अनुग्रह पाने की आशा नहीं कर सकते, जिसके लिए वे हमें आश्वस्त करते हैं की उन्हें हमें ये आशीष और अनुग्रह देकर बहुत प्रसन्नता होगी? निश्चय चाहे जो भी हो जाये, विश्वास उनपर दृढ़ता से भरोसा कर सकता है! हालाँकि प्रभु अभी अपनी आत्मा अपने दासों और दसियों पर उंडेल रहे हैं, लेकिन यह हमारा काम है की हम अपने आपको खाली पात्र बनाये - हम खुद को खाली करें ताकि हमें भरा जा सके - पात्र को ज्यादा से ज्यादा बड़ा करें ताकि हम परमेश्वर की आत्मा से ज्यादा से ज्यादा भरे जा सकें। `Z'04-283` R3431:5 (Hymn 313) आमीन

**रात का गीत (31 अगस्त)**

**यहूदा 1:21 अपने आप को परमेश्वर के प्रेम में बनाए रखो।**

परमेश्वर के अनुमान में मैं कुछ हूँ या कुछ नहीं, उसके लिए मेरे ज्ञान या प्रसिद्धि, या अच्छा वक्ता होने की क्षमता के बजाय, अपने भाइयों के लिए, प्रभु के कारणों के लिए, आमतौर से दुनिया के लिए, और यहां तक कि मेरे शत्रुओं के लिए, मेरे प्रेम को मापा जाना चाहिए! फिर भी हम यह नहीं समझ सकते हैं कि प्रेम की पवित्र के द्वारा उत्पन्न हुए बिना हमें परमेश्वर के गूढ़ रहस्यों का ज्ञान हो सकता है; क्योंकि परमेश्वर की बातों



को कोई भी मनुष्य नहीं जान सकता, केवल परमेश्वर की आत्मा के द्वारा जाना जा सकता है; लेकिन ज्ञान को खोने से पहले कोई भी इस पवित्र आत्मा को खो सकता है जिसने उसे यह ज्ञान दिया। इसलिए, चरित्र को मापने में पहले हमें प्रेम को रखना है, और इस प्रेम को हमारी प्रभु के प्रति निकटता और स्वीकारे जाने की मुख्य परीक्षा समझना है। `Z'11-422` R4917:6 (Hymn 166) आमीन